सहृदय कवि केशवदास

* डॉ. मनोज भार्गव

रीति काव्य के महान आचार्य केशवदास रीति काव्य के प्रथम कवि माने जाते है। रीति काव्य संस्कृत के काव्य शास्त्र को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने और उनके सरल उदाहरणो को संयुक्त श्रृंगारी उक्तियों के साथ प्रस्तुत करने वाला काव्य है। अतः रीति काव्यों को प्रस्तुत करने के लिये कवियों को अपने हृदय की तरंगो को झंकृत करना पडा। यह विडम्बना है कि इन्ही रीति काव्यों को प्रस्तुत करने का प्रथम श्रेय रखने वाले आचार्य केशवदास को हृदयहीन कवि माना जाता है। अधिकांश विद्वान केशवदास को हृदयहीन कवि मानते हैं। कुछ विद्ववानो की दृष्टि में वे कठिन काव्य के प्रेत है। प्रेत शब्द से ही उनके प्रति साहित्यिक पूर्णग्रह नजर आता है। उनके वारे में उक्ति प्रसिद्व है कि–'' ***कवि को देन न चहै विदाई। पूछे केशव की कविताई।''*** इससे उनकी रचनाओं की क्लिष्टता प्रकट होती है हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ आलोचक आचार्य रामचण्द्र शुक्ल स्पष्ट रूप से कहते है कि –

1.केशव को कवि हृदय नही मिला था, उनमें वह सहृदयत और भावुक्ता भी न थी, जो एक कवि में होनी चाहिये। वे संस्कृत साहित्य से सामग्री लेकर अपने पंडित्य और रचना कौशल की धाक जमाना चाहते थे पर इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये भाषा पर जैसा अधिकार होना चाहिये वैसा उन्हे प्राप्त न था; केशव उक्ति वैचित्रय और शब्द क्रीडा के प्रेमी थे। जीवन के नाना गंभीर और मर्मिक भावों पर उनकी दृष्टि नही थी''। 1 डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में 2. कवि को जिस प्रकार का संबेदनशील और प्रेषक धर्म वाला हृदय मिलना चाहिये वैसा केशवदास को नही मिला था ''। 2 इन समीक्षको के द्वारा केशव को हृदयहीन कवि कहने का कारण है कवि की अलंकार प्रियता, पांडित्य प्रदर्शन और चमत्कार भरने का हठ। यह सत्य है कि केशवदास अलंकारों की भरमार करने वाले और संस्कृत काव्य शास्त्र के अगाध पंडित और भाव को सहजता के स्थान पर चमत्कार के साथ प्रकट करने वाले कवि हैं परन्तु उन्हे हदयहीन कहना पूर्णतः अनुचित एवं अन्यायपूर्ण है। जो कवि की सहृदयता देखना चाहते है वे केशव के इस दोहे को देख सकते हैं। ***केशव केसनि उस करि उस अरिंहु न कराई। /चंद्रवदनि मृगलोचनि वावा कहि कहि जाय ।।*** जिसमें एक रसिक हृदय को सफेद वालो के कारण सुन्दर कन्याओ के द्वारा बाबा या बूढा कहा जा रहा है। यह भी तो अपने आप में मार्मिक भाव व्यक्त करता है। आज के युग में जहॉ भरी जवानी में सफेद बाल हो जाते हैं वहॉ महज सफेद बाल के आधार पर किसी को बूढा नही कहा जा सकता है। जब आधुनिक मानव को यह स्थिति पीडा दे सकती है तो सोचिये केशव के युग में एक कवि जिसकी अजीविका ही कविता हो, श्रृंगार ही उसका कवित्व हो। पूरा जीवन रसिकता में बीता हो उसके एक सफेद बाल के आधार पर बूढा कहे जाने पर मार्मिकता अनुभव होती होगी। ऐसी मार्मिक व रसयुक्त बात एक सहृदय कवि ही कह सकता है। यह प्रसंग तो केशवदास की रसिकता का परिचय देता है परन्तु केशवदास की रचना रामचंद्रिका जिसे आधार पर ही उन्हें हृदयहीन कहा जाता है उन्ही के मार्मिक प्रसंग उन्हें सहृदय भी सिद्व करते हैं। लक्ष्मण को शक्ति लगने पर केशव ने जो राम विलाप प्रस्तुत किया है उसमें केशवदास की सहृदयता एवं शोक विह्वलता देखी जा सकती है। 3. लक्ष्मण राम जही अवलोर्क्यो, नैनन ते न रहयो रक्षो जल रोर्क्यो। वारक लक्ष्मण मोहि विलोकौ, मो कहै प्राण चले तजि रोकौ। है सुमिरौ गुन केतिक तेरे, सोदर पुत्र सहायक मेरो। लोचन बात तुही धनु मेरो, तूबल विक्रय बारक हेरो।। 3 जिस समय विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को अपने साथ लेकर चलते है उस समय का हृदय द्रावक चित्र कवि की सहृदयता व्यक्त करता है। 4. रामचलत नृप के युग लोचन वारि भरित भये वारिद रोचन। पायन परि ऋषि के सजि मौनहि। केशव उठि गये भीतर भौनहि।।''5 सीताहरण के समय राम के शोक का दृश्य बडा ही मार्मिक है। राम मारीच को मारकर जैसे ही अपनी कुटिया पर लौटते है और वहां सीता को कुटिया में नही पाते हैं वैसे ही वे संशय एवं संदेह में डूब जाते हैं और लक्ष्मण से कहते है –

5. ''निज देखौ नही शुभ गीतहि सीतहि कारण कौन अबही। अति मोहित के बन मांझी गई सुर मारग है, मृग सारयो जही। कटु बात कुछ तुमसौ कहि आई किधौ तेहि त्रास दुराय रही। अब है यह पूर्णकुटी किधौ और किधौ वह लक्ष्मण होई नहीं''।। मेघनाद का वध हो जाने पर रावण की सारी योजनाओं पर पानी फिर जाता है उस समय रावण की विह्वल दशा हो जाती है और वह सर्वस्वत्याग करने को तत्पर हो जाता है–

6. ''आजु आदित्य जल, पवन पावक प्रबल,/चंद आनंद भय त्रास जग की हरी।/गान किन्नर करों, नृत्य गंधर्व कुल, /यक्ष तिथि लक्ष उर यक्ष कर्दम धरौ।/ब्रहम रूद्रादि दै देव तिहुँ लोक के,/राज को जाय अभिषेक इंद्रहिं करौं।/आजु सिय राम दै, लंक कुल दूषणाहि,/यज्ञ को जाय सर्वज्ञ विप्रहु बरौ''।। 6

* अतिथि व्याख्याता, हिन्दी, शा. कन्या महाविद्यालय, बीनागंज, गुना

लंका में जाकर अंगद की शिक्षा में कितनी भाव प्रवणता है– 7. हाथी न साथी न छोटे न चेरे न गांव न ठांऊ कुठाऊ बिलै है। तातन मात न पुत्र न मित्र न वित्त न तीय कहूं संग जैहै ''।। 7 ऋषि विश्वामित्र द्वारा राम को बन में ले जाने के समय का संवाद बडा मार्मिक है – 8. ''राजन मं तुमराज बडे अति मैं मुखमांगो सुदेहु महाव्रत।8

लेकिन उत्तर में यह मिलता है–

9. ''प्राण दिए धन जॉहि दिये सब केशव राम न जाहि दिये अब।। 9 रामचंद्रिका के इन प्रसंगो को देखकर उनपर हृदयहीनता का आरोप लगाना तर्कसंगत नही है। रामचंद्रिका के अतिरिक्त केशव की रसिक प्रिया एवं कविप्रिया तो सरसता से ओतप्रोत है। चूंकि ये रचनाये नायक नायिका प्रेम एवं श्रृंगार लीलायें, साथ ही विभिन्न दशायें व्यक्त करती हैं। अतः उनमें भावो की मार्मिकता व्यजित हुई। डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार– 10. ''प्रायः आलोचको ने केशव की रामचंद्रिका को ही देखकर उन्हे कठिन काव्य का प्रेत, क्लिष्ट कवि अथवा हृदय हीन कह डाला है। यदि वे केशव की रसिक प्रिया एवं कविप्रिया को ध्यान से पढते तो केशव को कभी हृदयहीन कवि नही कह सकते थे। रसिक प्रिया में राधिका की वियोग दशा का मार्मिक चित्र देखिये 11. ''केशव चौकति सी चितवै क्षितिया धरकै तरकै तकिछाही। बूझिये और कहै मुख और सु और की और भई क्षण माही। डीठि लगी किधौ बाई लगी मन भूलिपरयौ कै करयो कछु काही। घूंघट की घट की पट की हरि आजु कछु सुधि राधि कै नाही''।। 11 केशवदास द्वारा अंकित वियोग का एक दृश्य ''कविप्रिया का भी देखें जिसमें प्रिय के वियोग में नायिका की आंखे वर्षा से होड़ लगा रही हैं, सांसो के साथ ही रात बढ़ती जा रही है, हंसी हंसिनी के समान लुप्त हो गई है, नींद क्षण भर के लिए बिजली के समान आती है और न जाने फिर कहॉ चली जाती है। वह पयीहे की भांति दिन–रात पी–पी कहती रहती है और उसका शरीर आग के बिना ही विरह ताप से संतप्त हो रहा है। केशव की सरसता को व्यक्त करने वाला यह छंद इस प्रकार है–

12. ''मेह कि है सखि आंसू उसासनि साथ निसासु विसाखिनि वाढी। हांसी गई उडि हंसिनि ज्यों चपलासमनींद भई पति काढी। चातकि ज्यों पिऊ–पिऊ रटै, चढी चाप तरंगिनी ज्यों तन गाढी।। केशव वाकी दसा सुनि है, अब अग्नि बिना अंग अंगन डाढी।।2 इस प्रकार की मार्मिक उक्तियां कहने वाला कवि ह दयहीन नही हो सकता है। कवि हृदय से ही उत्पन्न करके कविता बनाता है फिर केशवदास की रचनाओं के आधार पर उनकी कवित्व शक्ति पर प्रश्न नही उठाया जा सकता है भक्ति काल की सुदृढ़ परम्परा में जिस प्रकार श्रृंगारिकता प्रविष्ट हो रही थी उससे भक्ति रचनाओ की पवित्रता समाप्त हो रही थी। ऐसे में श्रृंगारिकता को एक अन्य धारा के रूप में निर्मित करना आवश्यक था। यह कार्य केशवदास ने ही किया। इस कार्य के महत्व को प्रतिपादित करते हुये डॉ. नगेन्द्र कहते है–

13. ''भक्तिकाव्य की वेगवती धारा की रीति पथ पर मोडने के लिये एक प्रभावशाली व्यक्तित्व की आवश्यकता थी, प्रतिभा से युक्त यह व्यक्तित्व केशव का था।'' 13 अतः केशव की विराट प्रतिभा को देखते हुये उनका पाण्डित्य अलंकारिकता सहज समझी जा सकती हैं। इस आधार पर वे हृदयहीन सिद्व नही किये जा सकते। उपरोक्त मूल्यांकन के पश्चात् केशवदास सहृदय कवि सिद्व होते है और डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना के शब्दो में – 14. केशव में मानव मनोभावो को परखने की पूर्ण क्षमता थी, भावों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने की अद्भुत शक्ति थी, और उनमें भावुकता एवं सहृदयता भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थी। अंतत कहा जा सकता है कि रीति काल के प्रमुख आचार्य कवि केशवदास एक सहृदय कवि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. रामचन्द्र शुक्ल। 2. हिन्दी साहित्य – डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी। 3. रामचंद्रिका – केशवदास। 4. रामचंद्रिका – केशवदास। 5. रामचंद्रिका –केशवदास। 6. रामचंद्रिका–केशवदास। 7. रामचंद्रिका–केशवदास। 8. रामचंद्रिका–केशवदास। 9. रामचंद्रिका–केशवदास। 10. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना। 11. रसिक प्रिया–केशवदास। 12. कवि प्रिया–केशवदास 13. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नागेन्द्र । 14. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना।